सपरिवार शान्तिकुञ्ज आये लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिड़ला जी 3

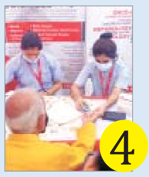

लोकमंगल के पथ पर चलते युगसेनानियों की सृजनात्मक गतिविधियाँ 4

6-7 आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का मध्यप्रदेश राजस्थान प्रवास, नई स्थापनाएँ हुईं

पद्मश्री कैलाश खेर आए संगीत संध्या से झंकृत हो गया विवि परिसर 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

स्वर्ण जयन्ती वर्ष • गायत्री तीर्थ • शान्तिकुञ्ज 1971-2021 हरिद्वार

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अप्रैल 2021

वर्ष : 33, अंक : 19

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 मार्च 2021

वार्षिक चंदा : ....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : ....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

श्रद्धा और शालीनतायुक्त जीवन जीयें

साधना से सिद्धि एवं परमात्मा की प्राप्ति का प्रबल आधार है श्रद्धा

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

श्रद्धा का अर्थ है-आत्मविश्वास। इस विश्वास के सहारे मनुष्य अभाव में, तंगी में, निर्धनता में, कष्ट में, एकान्त में भी घबराता नहीं। जीवन के अन्धकार में श्रद्धा प्रकाश बनकर मार्गदर्शन करती है और मनुष्य को उस शाश्वत लक्ष्य से विलग नहीं होने देती। आत्मदेव के प्रति, ईश्वर के प्रति, जीवन लक्ष्य के प्रति हृदय में कितनी प्रबल जिज्ञासा है, जीवन की इस विशालता को जानना हो तो मनुष्य के अन्तःकरण की श्रद्धा को नापिये। यह वह दैवी मार्गदर्शन है, जिसे प्राप्त कर सांसारिक बाधाओं का विरोध कर लेना सहज हो जाता है।

- अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1985

हमारे चिन्तन में गहराई हो, साथ ही श्रद्धायुक्त नम्रता भी। अन्तरात्मा में दिव्य-प्रकाश की ज्योति जलती रहे। उसमें प्रखरता और पवित्रता बनी रहे तो पर्याप्त है। पूजा के दीपक इसी प्रकार टिमटिमाते हैं। आवश्यक नहीं कि उनका प्रकाश बहुत दूर तक फैले। छोटे-से क्षेत्र में पुनीत आलोक जीवित रखा जा सके तो वह पर्याप्त है।

श्रद्धा वह प्रकाश है जो सत्य की प्राप्ति के लिए बनाये गये मार्ग आत्मा को दिखाती रहती है। जब भी मनुष्य एक क्षण के लिए लौकिक चमक-दमक तथा कामिनी और कंचन के लिए मोहग्रस्त होता है तो माता की तरह ठण्डे जल से मुँह धोकर जगा देने वाली शक्ति यह श्रद्धा ही होती है। सत्य के सद्गुण, ऐश्वर्य-स्वरूप एवं ज्ञान की थाह अपनी बुद्धि से नहीं मिलते। वे तब मिलते हैं जब उसके प्रति सविनय प्रेम-भावना विकसित होती है और उसी को 'श्रद्धा' कहते हैं। श्रद्धा सत्य की सीमा तक साधक को साधे रहती है, सँभाले रहती है।

श्रद्धा के बल पर ही मलिन चित्त अशुद्ध चिन्तन का परित्याग करके बार-बार परमात्मा के चिन्तन में लगा रहता है। बुद्धि भी जड़-पदार्थों में तन्मय न रहकर परमात्मज्ञान में अधिक से अधिक सूक्ष्मदर्शी होकर दिव्य भाव में बदल जाती है। मनुष्य का स्वयं का ज्ञान और तार्किक शक्ति इतनी बलवान नहीं होती कि वह निरन्तर उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक के यथार्थ और दूरवर्ती परिणामों को आत्मा के अनुकूल होने का विश्वास दे सके। तर्क प्रायः व्यर्थ से दिखाई देते हैं। ऐसे समय जब अपने कर्मों के औचित्य या अनौचित्य को परम प्रेरक शक्ति के हाथों में सौंप देते हैं तो एक प्रकार की निश्चिन्तता मन में आ जाती है, मन का बोझ हल्का हो जाता है। जिसकी जीवन-पतवार परमात्मा के हाथों में हो, उसे किसका भय? सर्वशक्तिमान से सम्बन्ध स्थापित करके ही मनुष्य निर्भय हो जाता है, उसके स्पर्श से ही मनुष्य में अजेय बल आ जाता है। व्यक्तित्व में सद्गुणों का प्रकाश और दिव्यता झरने लगती है। जीवन में आनन्द झलकने लगता है। यह सम्बन्ध और स्पर्श जब तक कि पूर्णता प्राप्ति नहीं होती, तब तक श्रद्धा के रूप में प्रकट और विकसित होता है। वह एक प्रकार से पाथेय है, इसलिए उसका मूल्य और महत्त्व उतना ही है जितना अपने लक्ष्य का, गन्तव्य का, अभीष्ट का, आत्मा, सत्य अथवा परमात्मा की प्राप्ति का।

परमात्मा के प्रति अत्यन्त उदारतापूर्वक आत्म-भावना पैदा होती है, वही श्रद्धा है। सात्विक श्रद्धा की पूर्णता में अन्तःकरण स्वतः पवित्र हो उठता है। श्रद्धायुक्त जीवन की विशेषता से ही मनुष्य-स्वभाव में ऐसी सुन्दरता बढ़ती जाती है जिसको देखकर श्रद्धावान् स्वयं सन्तुष्ट बना रहता है। श्रद्धा सरल हृदय की ऐसी प्रीतियुक्त भावना है जो श्रेष्ठ पथ की सिद्धि कराती है। इसीलिए शास्त्रकार कहते हैं-

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥

-रामायण, बालकाण्ड

"हम सर्वप्रथम भवानी और भगवान, प्रकृति और परमात्मा को श्रद्धा और विश्वास के रूप में वन्दन करते हैं जिसके बिना सिद्धि और ईश्वर दर्शन की आकांक्षा पूर्ण नहीं होती।"

ज्ञान-भक्ति का निरूपण करते हुए तुलसीदास जी उत्तरकाण्ड में लिखते हैं-

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई।
जो हरि कृपा हृदय बस आई॥
जप तप व्रत जम नियम अपारा।
जो श्रुति कह शुभ धर्म अधारा॥
तेई तृन हरित धरै जब गाई।
भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
एहि विधि लेसै दीप तेजराशि विज्ञानमय।
जातहि जासु समीप जरहिं मदादिक सुलभ सब॥

जब तक मनुष्य के अन्तःकरण में श्रद्धारूपी गाय का जन्म नहीं होता तब तक जप, तप, नियम, व्रत आदि जितने भी धर्माचरण हैं उनमें मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। यह श्रद्धा ही जीवन की कठिनाइयों में मनुष्य को पार लगाती है और आत्म-गुणों का विकास करती हुई उसे विज्ञानयुक्त परमात्मा के प्रकाश तक जा पहुँचाती है।

श्रद्धा का आविर्भाव सरलता और पवित्रता के संयोग से होता है। पार्थिव वस्तुओं से ऊपर उठने के लिए सरलता और पवित्रता इन्हीं दो गुणों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। इच्छा में सरलता और प्रेम में पवित्रता का विकास जितना अधिक होगा उतनी ही अधिक श्रद्धा बलवान होगी। सरलता द्वारा परमात्मा की भावानुभूति होती है और पवित्र प्रेम के माध्यम से उसकी रसानुभूति। श्रद्धा दोनों का सम्मिलित स्वरूप है। उसमें भावना भी है रस भी। जहाँ उसका उदय हो वहाँ लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाई का अधिकांश समाधान तुरन्त हो जाता है। अविश्वस्त व्यक्तियों के आगे थोड़ा-सा भी काम आ जाता है तो उससे उन्हें बड़ी हड़बड़ाहट होती है, किन्तु यदि उसी काम को साहस और भावना के साथ हाथ में लिया जाता है तो घबराहट और कठिनता भी आनन्द में बदल जाती है। जो बोझ का काम प्रतीत होता था वही सरलता से प्राप्त कर लेने योग्य बन जाता है।

प्राचीन काल में पवित्र अन्तःकरण वाले महान पुरुषों द्वारा अज्ञान अन्धकार में भटकते हुए लोक-जीवन को सत्य मार्ग पर अग्रसर करने का माध्यम उनके द्वारा जगाई हुई श्रद्धा से ही होता रहा है। शिष्यों को श्रद्धा का पूर्ण पाठ तथा साधना की स्थिरता के लिए तप भी आवश्यक था, युग और परिस्थितियाँ बदल जाने पर आज भी आवश्यक है। परमात्मा सत्य है उसके गुण और स्वभाव अपरिवर्तनशील हैं इसी तरह वहाँ तक पहुँचने का मार्ग और माध्यम भी अपरिवर्तित ही है। उसे आज भी पाया और अनुभव किया जा सकता है, पर उस स्थिति की परिपक्वता के बीच में जो साधनाएँ, परिवर्तन, हलचल, कठिनाइयाँ और दुरभिसन्धियाँ आती हैं उनके लक्ष्य प्राप्ति की भावना की स्थिरता के लिए श्रद्धा आवश्यक है।

श्रद्धा तप है। वह ईश्वरीय आदेशों पर निरन्तर चलते रहने की प्रेरणा देती है। आलस्य से बचाती है। कर्तव्य-पालन में प्रमाद से बचाती है। सेवा-धर्म सिखाती है। अन्तरात्मा को प्रफुल्ल, प्रसन्न रखती है। इस प्रकार के तप और त्याग से श्रद्धावान व्यक्ति के हृदय में पवित्रता एवं शक्ति का भण्डार अपने आप भरता चला जाता है। गुरु कुछ भी न दे तो भी श्रद्धा में वह शक्ति है जो अनन्त आकाश से अपनी सफलता में तत्व और साधन को आश्चर्यजनक रूप में खींच लेती है। ध्रुव, एकलव्य, अज, दिलीप की साधनाओं में सफलता का रहस्य उनके अन्तःकरण की श्रद्धा ही रही है। उनके गुरुओं ने तो केवल उसकी परख की थी। यदि इस तरह की श्रद्धा आज भी लोगों में आ जाये और लोग पूर्ण रूप से परमात्मा की इच्छाओं पर चलने को कटिबद्ध हो जायें तो विश्वशान्ति, चिर-सन्तोष और अनन्त समृद्धि की परिस्थितियाँ बनते देर न लगे। उसके द्वारा सत्य का उदय, प्राकट्य और प्राप्ति तो अवश्यम्भावी हो जाता है। इसी बात को शास्त्रों में संक्षेप में इस प्रकार कहा गया है-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञान लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

-गीता

"जितेन्द्रिय तथा श्रद्धावान् पुरुषों को ही ज्ञान मिलता है और ज्ञान से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। सत्य समुपलब्ध होता है।"

आदर्शों को चरितार्थ करने के लिए मुहूर्त की प्रतीक्षा आवश्यक नहीं। उसके लिए सदा सुअवसर है। वह अभी भी है और कभी भी। सबसे अच्छा समय तब है जब परिस्थितियाँ सर्वथा प्रतिकूल जा रही हों।

- अल्बर्ट श्वाइजर

सम्पादकीय

भवानी शंकरौ वन्दे, श्रद्धा विश्वास रूपिणौ

‘श्रद्धा और विश्वास’ की दृढ़ता के आधार पर ही उठते हैं युग निर्माण जैसे ऊँचे उद्देश्यों के लिए बड़े कदम

श्रद्धा और विश्वास का बल

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ‘रामचरित मानस’ एक ऐसी प्राणवान कालजयी रचना है, जो पिछली चार शताब्दियों से हर पीढ़ी में भगवान राम के प्रति आस्था का पोषण करती आ रही है। जीवन में सहजता से आध्यात्मिक मूल्यों का संचार करने वाला, भगवान राम के जीवन-आदर्शों के प्रति अनुराग उत्पन्न करने वाला, परमात्मा के साथ सामीप्य की अनुभूति का आनन्द प्रदान करने वाला यह ग्रंथ अनूठा है, अद्‌भुत है। यह गोस्वामी जी के उस संत हृदय का दर्पण है, जिसने ग्रंथ के मंगलाचरण में ही ईश वंदना इन शब्दों में की है-

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥

अर्थात्-श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वती जी और श्री शंकरजी की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते।

परम पूज्य गुरुदेव ने सितम्बर-85 की अखण्ड ज्योति में लिखा है कि श्रद्धा और विश्वास मनुष्य जीवन के उन आधारभूत सिद्धान्तों में से हैं जिससे वह पूर्ण विकास की ओर गमन करता है। श्रद्धा न हो तो सांसारिक सफलताएँ प्राप्त करके भी आत्मिक सुख प्राप्त न कर सकेगा, क्योंकि जिन गुणों से आध्यात्मिक सुख मिलता है, उनकी पृष्ठभूमि श्रद्धा और विश्वास पर ही टिकी है।

रामचरित मानस के रचनाकार की भगवान श्रीराम के जीवनादर्शों के प्रति अथाह श्रद्धा ही उनकी इस महान कृति में प्रतिबिम्बित हुई है। भगवान के अनुग्रह-आशीर्वाद और अपनी क्षमताओं के प्रति दृढ़ विश्वास के बल पर ही यह कालजयी रचना संभव हुई है। यह श्रद्धा और विश्वास केवल स्तुति तक ही सीमित नहीं रहे होंगे। वे तो गोस्वमी जी के चिन्तन और भावनाओं में हर पल घुले-मिले रहे होंगे। तभी परमात्मा के प्रति सतत अनुराग उत्पन्न करने वाली भगवान की लीलाओं का ऐसा प्राणवान चित्रण संभव हो पाया है।

हनुमान जी ने ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया है। यह उनके अपने इष्ट-आराध्य के प्रति सतत अनुराग और उनकी कृपा के प्रति दृढ़ विश्वास से भी सम्भव हुआ। बड़े-बड़े कार्यों के लिए बड़ी शक्ति चाहिए। प्रभु श्रीराम के प्रति अनन्य श्रद्धा से उन्हें हर दुर्गम कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक शक्ति मिलती रही। जब अपने इष्ट की सामर्थ्य और अपनी क्षमताओं पर दृढ़ विश्वास होता है, तभी कोई हनुमान चुनौतियों को ललकारता और दुर्गम कार्यों को सिद्ध करता दिखाई देता है।

मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा जैसे लेखकों की रचनाएँ मर्मस्पर्शी इसलिए हैं क्योंकि उनकी भावनाओं में समाज की पीड़ा और पिछड़ेपन को दूर करने की हूक समाहित थी, जो उनकी लेखनी के माध्यम से उभरती रही। उनकी रचनाएँ शब्द-चातुर्य नहीं, उस समाज का दर्पण हैं, जिसमें वे विराट परमात्मा के दर्शन करते थे और उसकी सेवा में समर्पित रहा करते थे।

महाराणा प्रताप, शहीद भगत सिंह, वीर सावरकर, सुभाषचंद्र बोस जैसे शहीद-बलिदानियों के अपने समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और विश्वास ने ही उन्हें घोर यातनाएँ सहने में सक्षम और मानवता का पथ-प्रदर्शक बनाया है।

महात्मा गाँधी आम जनमानस की तरह धन कमाने और भौतिकवादी जीवन जीने से संतुष्ट हो जाते तो ‘महात्मा’ कैसे बन पाते! सत्य और अहिंसा के पुजारी ने हर पल राम को अपने हृदय में रखकर पूरे आत्मविश्वास के साथ अंग्रेजों के अत्याचार से भारतमाता को मुक्त कराने की ठानी तो कमाल हो गया। उनके दृढ़ विश्वास का ही बल था जो आधी धोती से काम चलाने वाले गाँधीजी से वे अंग्रेज भी आँख मिलाने का साहस नहीं कर पाते थे, जिनके साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं हुआ करता था।

सर्वतोमुखी विकास के लिए

आज व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष के साथ-साथ युगऋषि के ‘युग परिवर्तन’ के संकल्प को साकार करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की ही है। सफलता के लिए साधन ही नहीं, संकल्प का बल भी चाहिए। यह बल श्रद्धा और विश्वास के आधार पर ही प्राप्त होता है। कमाल संकल्प-शक्ति ही करती है। परम पूज्य गुरुदेव सितम्बर 1985 की अखण्ड ज्योति पत्रिका में लिखते हैं-

“श्रद्धा का अर्थ है-आत्म-विश्वास। इस विश्वास के सहारे मनुष्य अभाव में, तंगी में, निर्धनता में, कष्ट में, एकान्त में भी घबराता नहीं। जीवन के अन्धकार में श्रद्धा प्रकाश बनकर मार्गदर्शन करती है और मनुष्य को उस शाश्वत लक्ष्य से विलग नहीं होने देती। आत्मदेव के प्रति, ईश्वर के प्रति, जीवन लक्ष्य के प्रति हृदय में कितनी प्रबल जिज्ञासा है, जीवन की इस विशालता को जानना हो तो मनुष्य के अन्तःकरण की श्रद्धा को नापिये। यह वह दैवी मार्गदर्शन है, जिसे प्राप्त कर लेना सहज हो जाता है।

यह श्रद्धा ईश्वर प्राप्ति या पूर्णता के लिए ही आवश्यक नहीं, वरन् वह अपने लोगों पर आत्म-भाव, धर्म और संस्कृति के प्रति प्रेम, राष्ट्र और जाति के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा का भी पाठ सिखाती है। मनुष्य जिस सामूहिकता में बँधा हुआ है उसका जीवन और प्राण भी श्रद्धा ही है।

श्रद्धा मनुष्य के सर्वतोन्मुखी विकास का आधार है। अतः मनुष्य जीवन में श्रद्धा उद्‌देश्य बनकर रहनी चाहिए। श्रद्धा ही मनुष्य जीवन का आदर्श होना चाहिए। श्रद्धा का अर्थ है आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर विश्वास। श्रद्धा आस्तिकता की धुरी है।”

युग निर्माणी दिशाधारा

इन दिनों ‘गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना’ और ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ जैसे विशेष अभियान से लेकर अनेक प्रचारात्मक, संगठनात्मक, सृजनात्मक अभियान गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे हैं। शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष सक्रियता का एक विशेष अवसर लेकर प्रस्तुत है। योजनाएँ अनेक हैं, अभियान कई चल रहे हैं, लेकिन लक्ष्य एक ही है-मानव में देवत्व का उदय और सतयुगी समाज की स्थापना। ऐसे समाज का निर्माण जिसमें ईश्वर के प्रेम, न्याय एवं अनुशासन के प्रति आस्था हो। जिसमें आदर्शों के प्रति असीम प्यार हो, परस्पर प्रेम और सहकार की भावना हो।

दिये को जलाने के लिए पहले माचिस को जलकर स्वयं भीतर की आग को प्रकट करना होता है। गड्‌ढा खोदने के लिए पहले नुकीली धार वाले औजारों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण जाग्रत् देवात्माएँ ही कर सकती हैं। इस देवत्व को जगाने की सबसे बड़ी आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की ही है।

यह श्रद्धा अपने इष्ट, अपने गुरु, उनके जीवन-आदर्श, उनके संकल्प और अपने मिशन के प्रति निरन्तर प्रगाढ़ होनी चाहिए। यह साधना परम आवश्यक है। हमारी श्रद्धा जितनी प्रगाढ़ होगी, उतने ही अनुपात में गुरुकार्य के बीच आने वाले अवरोध हटते जायेंगे या यों कहें कि वे अवरोध बड़े पहाड़ों की जगह छोटी-मोटी शिलाएँ प्रतीत होने लगेंगे। बढ़ती श्रद्धा के साथ उनको पूरा करने की शक्ति मिलती चली जाएगी।

अवरोध किसके जीवन में नहीं आते? व्यवधान किसके सामने उपस्थित नहीं होते? लेकिन जिसका जितना बड़ा लक्ष्य, जितना बड़ा संकल्प होता है वह उतने ही साहस के साथ अवरोधों को पार करता चला जाता है। वरना बहाना ढूँढ़ने वालों और बुजदिलों को तो कार्य न करने के सौ बहाने अपने दैनंदिन के घरेलू कामों में या धंधे-रोज़गार में मिल ही जाते हैं। श्रद्धावान् वे हैं जो हर तरह की परिस्थितियों से तालमेल बिठाकर अपने इष्ट के, भगवान के, समाज के कार्यों के लिए समुचित समय निकाल ही लेते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी ने हमें सदैव अपने संरक्षण-मार्गदर्शन का प्रबल विश्वास दिलाया है। हमारा उत्साहवर्धन एवं पथ-प्रदर्शन करने के लिए उनका प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। उनकी वाणी और लेखनी पर हमारा विश्वास जितना प्रबल होगा उतने ही दृढ़ संकल्प के साथ गुरुकार्यों के लिए समर्पण बढ़ता जायेगा।

यह विश्वास अपनी सामर्थ्य एवं गुरुसत्ता के अनुदान-आशीर्वादों के प्रति भी निरन्तर बढ़ना चाहिए। बहुत-सी बार कार्य कठिन दिखाई देता है, उसे पूरा करने में झिझक होती है, लेकिन हर परिस्थिति में अपने को गुरुकार्य के लिए समर्पित कर देने का साहस बटोर सकें तो अपनी क्षमता से कहीं बेहतर सफलता प्राप्त की जा सकती है। यह कोरी भावुकता नहीं है, अनुभव सिद्ध है। देखा गया है कि गायत्री परिवार में गिलहरी और शबरी जैसी भूमिका निभाने वालों को भी असाधारण सफलताएँ मिली हैं। एक चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी जब पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने वरिष्ठ अधिकारियों के पास गुरुसत्ता का संदेश लेकर पहुँचता है तो वह मन-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ने में सफल हो जाता है, असीम सम्मान पाता है। यह सब उनके श्रद्धा और विश्वास का ही चमत्कार है।

यह साधना करनी ही चाहिए

जीवन साधना का महत्त्व सर्वविदित है। कोई भी कौशल अनायास ही प्राप्त नहीं हो जाता। उसके लिए शक्ति साधना की आवश्यकता होती है। बरसों तक अखाड़े में पसीना बहाने के बाद पहलवान कुश्ती के दंगल में उतरते हैं। जीत-हार की संभावनाएँ तो सदैव रहती हैं, लेकिन जीत के प्रति विश्वास उन्हें सफलता की ओर अग्रसर करता है। मात्र सोच लेने से और शेखचिल्ली जैसी कल्पना कर लेने से कोई अच्छा संगीतकार नहीं बन सकता। उसके लिए निरन्तर स्वर-साधना करना ज़रूरी है। यह सच है कि श्रद्धा और विश्वास के आधार पर बड़े साहसी कदम उठाने के संकल्प उभरते हैं, लेकिन यह भी आवश्यक है कि अपने श्रद्धा-विश्वास को निरन्तर अभ्यास के साथ सुदृढ़ किया जाता रहे।

घर-घर जनसंपर्क और जन-जन में आत्मीयता संचार युग परिवर्तन के लिए आज की सर्वोपरि आवश्यकता है। प्रेरणा और पथ प्रदर्शन के लिए परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार पर्याप्त हैं। आवश्यकता उन्हें जीते हुए जीवन से शिक्षण देने वालों की है, अपना उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत करने वालों की है। जीवन में श्रद्धा और विश्वास बढ़ेगा तो परम पूज्य गुरुदेव के बताए सूत्र- • व्यस्त रहो, मस्त रहो। • सुख बाँटो, दुःख बँटाओ। • सलाह लो, सम्मान दो। • अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाओ। • बड़ों को सम्मान, छोटों को प्यार। आदि जीवन में उतरते चले जायेंगे। परिस्थितियों से तालमेल बिठाते हुए अपने अभियान को गति देना सरल प्रतीत होने लगेगा। केवल कर्त्तव्यनिष्ठा पर ध्यान दिया जाय और सफलता-असफलता की बागडोर अपनी गुरुसत्ता को सौंप दी जाय तो लोभ, मोह, अहंकार की मलिनताएँ क्रमशः धूमिल होती जाती हैं।

साधना पर्व नवरात्र

13 अप्रैल 2021-चैत्र प्रतिपदा के साथ संवत्-2078 आरम्भ हो रहा है। शक्ति-साधना का विशिष्ट पर्व 13 अप्रैल से 21 अप्रैल तक चलेगा। लाखों श्रद्धालु-भावनाशील साधक इन दिनों में शक्ति-साधना अनुष्ठान करते हैं। साधकों की अपनी-अपनी मनोकामनाएँ भी होती हैं, लेकिन सबसे बड़ा लक्ष्य युग की विभीषिकाओं के शमन तथा नवयुग के सृजन के लिए संघशक्ति के अभ्युदय का है। मंत्रजप, मंत्रलेखन, चालीसा पाठ जैसे साधना उपक्रमों का अपना विज्ञान है, अपना महत्त्व है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। लेकिन साधना की सिद्धि और शक्ति का जागरण उसके के प्रयोजन एवं सफलता के प्रति श्रद्धा-विश्वास की दृढ़ता पर बहुत कुछ आधारित होता है। इन्हें पुष्ट करने के लिए मनोयोगपूर्वक पुरुषार्थ करने तथा संकल्पपूर्वक अपनी सामर्थ्य से कुछ आगे बढ़ने की आवश्यकता होती है। शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष साधकों-स्वजनों से यही अपेक्षा रखता है।

जो अपने को गुरुकार्य के लिए समर्पित कर देते हैं, उनके योगक्षेम का ध्यान स्वयं भगवान रखते हैं। परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी अपने बच्चों की मनोकामनाएँ यथासंभव पूरा करते रहे हैं। उन्होंने बार-बार कहा है कि मनोकामनाएँ सुरसा की तरह होती हैं, जो बढ़ती ही जाती हैं, कभी पूरी नहीं होतीं। जो कुछ साधकों के हित में होगा और उनके वश में होगा, उन्हें वे अवश्य पूरा करेंगे।

आवश्यकता गुरुसत्ता के संकल्प से जुड़कर लोकपीड़ा को अपनी पीड़ा अनुभव करने और उसके निवारण के लिए तन्मयतापूर्वक जुट जाने की है। गोस्वामी जी की तरह हम भी श्रद्धा रूपी भवानी और विश्वास रूपी शिवजी को अपने जीवन में धारण कर गुरुकार्यों में जुट जायें तो निःसंदेह राम के रीछ-वानर एवं कृष्ण के ग्वाल-बालों की तरह युग निर्माण आन्दोलन में अपनी महती भूमिका निभा सकते हैं।

सक्षम एवं एम्स के सहयोग से शान्तिकुञ्ज में चल रहा है नेत्र कुम्भ 2021

27 अप्रैल तक चलेगा यह शिविर

समाजसेवी संस्था 'सक्षम' (समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल) एवं एम्स ऋषिकेश के नेत्र विशेषज्ञों के सहयोग से इन दिनों शान्तिकुञ्ज में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 'नेत्र कुम्भ-2021' चल रहा है। 13 मार्च 2021 को शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा, सक्षम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दयाल चंद पंवार, महासचिव श्री संतोष कुमार एवं एम्स ऋषिकेश के डीन डॉ. मनोज जी ने दीप प्रज्वलन कर इसका शुभारम्भ किया। इन महानुभावों ने इस अवसर पर शिविर के उद्देश्य और अपनी पारमार्थिक गतिविधियों की जानकारी दी। श्री महेन्द्र शर्मा जी ने कहा कि शान्तिकुञ्ज का उद्देश्य ही है पीड़ा और पतन निवारण। हम इस शिविर के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों की सेवा हो सके, इसके लिए भरपूर सहयोग प्रदान करेंगे। इस दौरान शांतिकुंज के डॉ ओपी शर्मा, डॉ मंजू चोपदार, डॉ. महेश खेतान, डॉ. ललित उत्प्रेती, राष्ट्रीय स्वयंसेवक कार्यकर्त्ता, सक्षम परिवार के स्वयंसेवक सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। नेत्र कुम्भ के प्रथम दिन 52 लोगों की जांच कर उन्हें दवाइयाँ दी गयीं।

शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, सक्षम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दयाल पंवार, महासचिव श्री संतोष कुमार एवं एम्स ऋषिकेश के डीन डॉ. मनोज जी नेत्र कुम्भ का शुभारम्भ करते हुए

- एम्स ऋषिकेश के डॉ. संध्या, डॉ. अर्नब, डॉ. अनुराग भारद्वाज, नोएडा के डॉ. फैजल चौधरी, डॉ. हिमांशु, डॉ. मनीष सहित अनेक नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक इस शिविर में अपनी भावभरी सेवाएँ दे रहे हैं।
- जरूरतमंदों को नि:शुल्क ओषधियाँ दी जा रही हैं।
- जिन्हें चश्मे की आवश्यकता है उन्हें शिविर परिसर में ही चश्मा बनाकर दिये जा रहे हैं।

गायत्रीतीर्थ का आशीर्वाद लेने पहुँचे उत्तराखण्ड के मंत्री श्री अरविंद पाण्डेय

14 मार्च को उत्तराखण्ड के केबीनेट मंत्री श्री अरविन्द पाण्डेय कुम्भ नगरी हरिद्वार में गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के आशीर्वाद लेने पहुँचे। उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से भेंटकर महाकुंभ की व्यवस्था से लेकर उत्तराखण्ड के विकास के कई विषयों पर चर्चा की। श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने कोरोना महामारी को देखते हुए प्रशासन द्वारा अपनाई जा रही सावधानियों और साधु, संतों के समागम पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हम सभी चाहते हैं कि महाकुंभ अपनी दिव्यता एवं भव्यता के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हो।

शांतिकुंज में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पड्या जी से चर्चा करते माननीय मंत्री श्री अरविंद पाण्डेय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

औषधीय पौधों पर शोध अनुसंधान में बेहतर योगदान के लिए शिक्षक डॉ. ललित राज एवं श्रीमती रूपम का सम्मान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मेडिसिन प्लांट विभाग में दो शिक्षक डॉ. ललित राज एवं श्रीमती रूपम ने फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम में बढ़-चढकर हिस्सा लिया। उन्होंने नेशनल प्रोग्राम ऑन टैक्नोलॉजी इन्हान्स लर्निंग एवं ऑल इंडिया काउन्सिल फॉर टैक्नोलॉजी एजुकेशन के कई कार्यक्रम किए। इनमें मुख्य थे प्लांट डवलपमेंट बायोलॉजी ऑर्गेनिक फार्मिंग फॉर सस्टेनेवल एग्रीकल्चर प्रोडक्ट, बायोमेडिकल नैनोटेक्नोलॉजी, ड्रग डिलवरी एंड इंजिनियरिंग इत्यादि। दोनों शिक्षकों को सभी बिन्दुओं पर बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करने हेतु देव संस्कृति विवश्वद्यालय की ओर से विशेष प्रोत्साहन पत्र प्रदान किया गया।

विभागाध्यक्ष व डीन डॉ. कर्ण सिंह ने बताया कि उनके विभाग में उच्च स्तर के शोधकार्य होते हैं। इनसे मेडिसिन प्लांट के क्षेत्र में अभिनव प्रयोगों को प्रोत्साहन मिलेगा। उल्लेखनीय है कि कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से देसंविवि में औषधीय पौधों की खेती व इसकी गुणवत्ता पर नए-नए शोधकार्य हो रहे हैं। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हर तरह के पेड़-पौधों में कोई न कोई औषधीय गुण होता है। आज ज़रूरत इनकी गुणवत्ता पहचानने और जनसामान्य को उसके समुचित लाभ दिलाने की है।

माननीय श्री ओम बिड़ला जी शान्तिकुञ्ज पधारे

कोटा में गायत्री परिवार से है बहुत पुराना जुड़ाव, अपने को मानते हैं गायत्री परिवार का सदस्य

उत्तराखण्ड के प्रवास पर आये लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिड़ला जी एवं उनका परिवार 14 मार्च की सायं शान्तिकुञ्ज भी आया। सभी ने बड़ी श्रद्धा के साथ गुरुस्मारकों को नमन किया, तत्पश्चात् श्रद्धेय डॉ प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंटकर उनके आशीर्वाद लिये। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी डॉ. अमिता बिडला, दोनों पुत्रियाँ-आकांक्षा एवं अंजलि बिरला-आईएएस एवं अन्य सहयोगी स्वजन उनके साथ थे। माननीय बिड़ला जी शान्तिकुञ्ज के ऑफिशियल यू-ट्यूब चैनल को नियमित रूप से देखते हैं।

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी से चर्चा करते माननीय लोकसभाध्यक्ष

माननीय श्री ओम बिड़ला जी अनेक वर्षों से गायत्री परिवार से जुड़े हैं। उन्होंने गायत्री परिवार के कई सार्वजनिक कार्यों में भाग लिया है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार पूरे विश्व में व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण का बुनियादी कार्य कर रहा है। सभ्य समाज की संरचना में इस परिवार का बहुत बड़ा योगदान है।

श्रद्धेया जीजी ने बिड़ला परिवार का पारिवारिक आत्मीयता के साथ स्वागत किया। उन्होंने शान्तिकुञ्ज को अपना मायका मानने तथा जब भी शान्ति, सत्प्रेरणा एवं नई ऊर्जा की आवश्यकता हो, यहाँ पारिवारिक आत्मीयतापूर्वक आने का आमंत्रण दिया।

माननीय श्री ओम जी ने देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी के साथ युवा उत्थान की योजनाओं पर विचार साझा किये, देसंविवि की गतिविधियों की जानकारी ली।

दिया, दिल्ली का सातवाँ वार्षिकोत्सव

YUVA ABHYUDAY2021
A Youth Renaissance

'दिया, दिल्ली' ने 14 मार्च को अपना सातवाँ वार्षिकोत्सव मनाते हुए विशेष वेबिनार 'युवा अभ्युदय 2021' का आयोजित किया। इसमें भारत, दुबई सहित कई देशों के युवा युड़े। मुख्य वक्ता अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, जाने माने बॉलीवुड कलाकार श्री सोनू सूद तथा श्री निशांत जैन आईएएस थे। वेबिनार की प्रमुख प्रेरणाएँ आध्यात्मिक जीवन से शारीरिक, मानसिक दक्षता में वृद्धि एवं समाज के नवनिर्माण में युवाओं की भूमिका सम्बन्धी थीं। प्रश्नोत्तरी का महत्त्वपूर्ण क्रम भी चला, जिसमें तीनों विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को जीवनोत्थान के महत्त्वपूर्ण सूत्र दिये।

दुबई से जुड़े श्री सोनू सूद ने कहा कि सोच और नियत सही हो, तो सफलता अवश्य मिलती है। उन्होंने शान्तिकुञ्ज एवं दिया, दिल्ली के युवाओं को दुर्व्यसनों से मुक्त रखने के प्रयासों की विशेष सराहना की।

दिया, दिल्ली से जुड़े यूपीएससी-14 (हिन्दी वर्ग) के टॉपर श्री निशांत जैन ने वेद, उपनिषदों का उल्लेख करते हुए युवाओं को सफलता के दस सूत्र बताये।

दिया ग्रुप-दिल्ली के मुख्य संयोजक श्री मनीष कुमार सिंह ने कहा कि अगर युवा जाग्रत् एवं चेतन होंगे, तो फिर उनका भविष्य कभी भी अंधकारमय नहीं हो सकता।

मुख्य वक्ता

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्री सोनू सूद एवं श्री निशान्त जैन-आई.ए.एस

> "अध्यात्म से मन दृढ़ निश्चयी, सकारात्मक सोच वाला एवं संकल्पवान बनता है। मन सुदृढ़ होगा तो सफलता की संभावना स्वतः ही बढ़ जायेगी। इसी शैली में स्वामी विवेकानंद, भगतसिंह, युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य आदि का जीवन ढला था। युवाओं को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।
>
> **- श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्या जी**

आओ जानें विश्वविद्यालय अपना
(देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड)

एशिया का पहला एवं एकमात्र सेंटर फॉर बॉल्टिक कल्चर एंड स्टडीज

देव संस्कृति विश्वविद्यालय विश्व भर के 60 से अधिक प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ MoU (Memorendum of Understanding) के अंतर्गत निरंतर उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

स्थापना से विगत ०४ वर्षों की संक्षिप्त यात्रा में सेंटर फॉर बाल्टिक कल्चर एंड स्टडीज की प्रमुख उपलब्धियाँ

सेंटर की स्थापना से वर्तमान तक की इस संक्षिप्त कालावधि में कुल मिलाकर 50 + विद्यार्थी एवं शिक्षक देव संस्कृति विश्वविद्यालय से बाल्टिक देशों के विविध प्रतिष्ठित संस्थाओं में अध्ययन एवं अध्यापन कर चुके हैं।	देव संस्कृति, भारतीय संस्कृति संग विचार क्रांति अभियान एवं युग निर्माण योजना के ब्रांड एम्बेसेडर के रूप में बाल्टिक देशों में मिशन के विस्तार हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अभूतपूर्व कार्य किया है।
बॉल्टिक केंद्र के पहले चार वर्षों में कुल मिलाकर बाल्टिक देशों से 300 से अधिक विद्यार्थी, शिक्षक, मंत्री, कलाकार, राजनयिक विश्वविद्यालय पधार चुके हैं एवं मिशन की गतिविधियों से परिचित भी हुए हैं।	लाटविया की स्थापना के 100 वर्षों के लाटवियन राष्ट्रीय उत्सव "उसिन्दियेना" का देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजन एवं इस अवसर पर प्रतिष्ठित राजनयिकों, अनेकों कलाकारों का विश्वविद्यालय आगमन।
देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बॉल्टिक देशों के 20+ विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों संग अनुबंध हैं।	भाषा, संस्कृति,संस्कार,पर्व-त्योहार एवं अन्य विविध रूपों में सांस्कृतिक साम्यता के विविध आयामों पर निरंतर शोध, लेखन एवं प्रकाशन।
इंटर्नेशनल जनरल ऑफ इंडो -बाल्टिक कल्चर एंड स्टडीज़ के माध्यम से शोध प्रकाशन कार्य।	बाल्टिक देशों में गायत्री शक्तिपीठ की स्थापना एवं गायत्री परिवार का विस्तार।

सेंटर फॉर बाल्टिक कल्चर एंड स्टडीज के माध्यम से देव संस्कृति विश्वविद्यालय विशेष रूप से उत्तरी यूरोप के बॉल्टिक देशों- लिथुआनिया, लाटविया एवं एस्टोनिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ -

- शिक्षण,शोध,संस्कृति,अध्यात्म एवं विज्ञान के क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग।
- विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों के पारस्परिक आदान-प्रदान।
- सेमीनार, वेबिनार, कॉन्फ्रेंस, शार्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम एवं विविध राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक महत्त्व के आयोजन।
- बाल्टिक भाषाओं का शिक्षण प्रशिक्षण एवं अन्य विविध माध्यमों से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रगतिशील है।

सेंटर फॉर बाल्टिक कल्चर एंड स्टडीज (संपर्क सूत्र) -
ईमेल : balticcentre.india@dsvv.ac.in • मो. नं.: +91 - 9258360606
www.dsvv.ac.in
@dsvvofficial Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

लोकमंगल के मार्ग पर चलते युग सेनानियों की सृजनात्मक गतिविधियाँ

पीड़ा निवारण के लिए आयोजित हुए शिविर

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर से लाभान्वित हुए 360 मरीज़

गढ़पुरा। बेगूसराय। बिहार

गायत्री मंदिर, गढ़पुरा में अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल दलसिंह सराय द्वारा 6 मार्च को निशुल्क जाँच शिविर का आयोजन किया गया। लगभग 360 रोगियों की आँखों की जाँच नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. सौरभ कुमार पाण्डेय द्वारा की गई। उनमें से मोतियाबिंद के चिह्नित रोगियों के ऑपरेशन की निशुल्क व्यवस्था भी गायत्री परिवार द्वारा अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल दलसिंह सराय में बनाई गई थी। शिविर का लाभ बेगूसराय, समस्तीपुर और खगड़िया जिलों से आए लोगों ने लिया।

शिविर के संचालक सुशील कुमार सिंघानिया ने बताया कि इससे पूर्व गायत्री परिवार द्वारा अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल में सौ से अधिक मरीजों की आँखों के ऑपरेशन किए गये थे, जिनका परीक्षण-परामर्श इस शिविर में किया गया।

शिविर का लाभ लेने एकत्रित हुए कई जिलों के मरीज

एक उत्सव की तरह सम्पन्न हुआ डोही नदी पर वार्षिक स्वच्छता अभियान

जोबट, अलीराजपुर। मध्यप्रदेश

28 फरवरी को गायत्री शक्तिपीठ जोबट के नेतृत्व में प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक डोही नदी पर स्वच्छता-श्रमदान अभियान चलाया गया। इस कार्य में पीडब्ल्यूडी, नगर परिषद, युवा प्रकोष्ठ, तहसील समन्वयक समिति और शिवगंगा का विशेष सहयोग रहा। महिला मंडल की पीत वस्त्र धारी बहिनों ने भी इस कार्य में बढ़-चढ़कर सहयोग दिया। इस अभियान का शुभारम्भ समाजसेवी श्री मेवालाल अग्रवाल एवं नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री दीपक चौहान ने स्वच्छता उपकरणों के पूजन के साथ किया।

शक्तिपीठ जोबट प्रतिवर्ष इस तरह का अभियान चलाकर नदी व घाटों की सफाई तथा गहरीकरण का कार्य करता है। गत वर्ष लॉकडाउन के कारण यह नहीं हो सकता था, इसलिए गंदगी अधिक ही थी।

डोही नदी को गन्दगी और जलकुम्भी से मुक्त कराने में जुटे परिजन

यह स्वच्छता अभियान एक उत्सव जैसा दिखाई दे रहा था। डोही नदी की बदलती काया और स्वच्छता-श्रमदान के अनूठे दृष्य को देखने के लिए भी नगरवासी बड़ी संख्या में आए थे।

वार्षिकोत्सव के साथ स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन

मेदान्ता हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने 125 मरीज़ों का स्वास्थ्य परीक्षण किया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

28 फरवरी 2021 को दुर्गा स्थल पार्क, सेक्टर एन, आशियाना लखनऊ में 9 कुण्डीय यज्ञ का वार्षिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। यह यज्ञ में 800 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम संचालक श्री अरुण श्रीवास्तव के अनुसार यज्ञ के समय साहित्य स्टॉल से 25000 रुपये के साहित्य की बिक्री हुई। स्वावलम्बन योजना के अन्तर्गत महिलाओं द्वारा कुटीर उद्योग के रूप में निर्मित घरेलू उत्पादों को भी बिक्री के लिए रखा गया था। यज्ञ का संचालन श्री अनिल तिवारी एवं श्री शशि भूषण ने किया।

गायत्री परिवार द्वारा घर-घर यज्ञ की परम्परा आरम्भ करना स्वास्थ्यवर्धक है।
- डॉ. नकुल सिन्हा, मेदान्ता हॉस्पिटल

यज्ञ के साथ सुप्रसिद्ध मेदान्ता हॉस्पिटल के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया था, जिसका 125 मरीजों ने लाभ लिया। मेदांता हॉस्पिटल के हृदय विभाग के निदेशक डॉ. नकुल सिन्हा, वाइस प्रेसिडेण्ट श्री सौरभ गुप्ता, डी.जी.एम. श्री अमित पाठक सहित कई चिकित्सकों ने इसके लिए अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। डॉ. सिन्हा ने गायत्री परिवार द्वारा घर-घर यज्ञ की परम्परा आरम्भ करना एक अच्छा अभियान है और समय की माँग भी। यज्ञ से निर्मित वातावरण शरीर में अच्छे हार्मोन्स उत्पन्न करता है, जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ प्रदान करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

लखनऊ में स्वास्थ्य परीक्षण करती मेदान्ता की टीम

सुदूरवर्ती ग्रामीणों के लाभार्थ

कथारा (गोमिया) बोकारो(झारखन्ड)

दिनांक 28 फरवरी को गायत्री परिवार कथारा द्वारा सियारी पंचायत के दारीदाग गाँव में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें सुदूरवर्ती क्षेत्रों से आए लगभग 100 ग्रामीणों का इलाज किया गया। डॉ. डी. कुमार-होमियोपैथ, डॉ. मनीष कुमार सिन्हा-दन्त एवं मुख रोग विशेषज्ञ तथा डॉ. केशव प्रजापति ने शिविर के लिए अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान कीं।

आरंभ में समाजसेवी श्री शशि शेखर महतो, श्री गुलाब हाँसदा, श्री महावीर मरांडी एवं श्री महादेव मांझी ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारम्भ किया। शिविर में आए ग्रामीणों को 50 जोड़ी नए जूते भी दिए गए।

यह गायत्री परिवार द्वारा गोमिया प्रखण्ड में आयोजित तीसरा निःशुल्क चिकित्सा शिविर था।

कोरोनावायरस संक्रमण से बचाव के लिए प्रोत्साहन एवं प्रयोग

प्रशस्ति पत्र प्रदान करते श्री अम्बाराम

कोरोना योद्धाओं का सम्मान

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट ने बसंत पंचमी पर कोरोना योद्धाओं के सम्मान का विशेष कार्यक्रम रखा था। इसमें चिकित्सा, शिक्षा, पुलिस, नगर परिषद के उन अधिकारी-कर्मचारियों को सम्मानित किया गया जिन्होंने कोरोना संक्रमण काल में अपनी जान जोखिम में डालकर समाज की सेवा की थी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संयुक्त कलेक्टर श्री अम्बाराम पाटीदार ने सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। गायत्री परिवार के श्री शिवराम शर्मा, रजनीकांत वाणी, श्रीमती केशर राठौर एवं महिला मण्डल ने उनका सम्मान किया।

इस कार्यक्रम में उन 12 परिव्राजकों का भी सम्मान किया गया, जिन्होंने '24 घण्टे के परिव्राजक बनें' अभियान में अपना योगदान दिया था।

वसंत पंचमी का कार्यक्रम 9 कुण्डीय यज्ञ के साथ मनाया गया। शक्तिपीठ पर 2 फरवरी से ही विविध क्रमों में सामूहिक जप साधना का क्रम आरम्भ कर दिया गया था।

कोविड-19 के संक्रमण से बचाव के लिए यज्ञ के प्रति बढ़ रहा है आकर्षण

पटियाला। पंजाब

गायत्री परिवार पटियाला द्वारा चलाई जा रही विभिन्न घरों एवं मंदिरों में यज्ञ और दीप यज्ञ की शृंखला की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती जा रही है। बड़ी संख्या में लोग कोविड-19 से बचाव के लिए भी यज्ञ करा रहे हैं। अब तो पटियाला के अलावा आसपास के नगरों से भी कार्यक्रमों के निमंत्रण मिल रहे हैं। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से जन्मदिन-विवाहदिन दीपयज्ञ के माध्यम से मनाने की परम्परा के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा बढ़ी है। कार्यक्रमों में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं को युगसाहित्य नियमित रूप से पढ़ने और बलिवैश्व यज्ञ अवश्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में रक्तदान महायज्ञ शृंखला

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी द्वारा रक्तदान महायज्ञ अभियान चलाया जा रहा है। इस क्रम में संत शिरोमणि गुरु रविदास जी की जयंती के उपलक्ष्य में 27 फरवरी को निघासन कस्बे के माँ गायत्री इंटर कॉलेज परिसर में रक्तदान महायज्ञ शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 25 युवाओं ने रक्तदान कर अपनी सेवाभावना का परिचय दिया।

युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी ने इस शिविर से पूर्व 54 दिनों में सात शिविर आयोजित किए, जिनमें लगभग 300 यूनिट रक्तदान हुआ।

शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि उप जिला अधिकारी निघासन श्री ओम प्रकाश गुप्ता ने देव पूजन और संत रविदास जी को दीपांजलि समर्पित करके किया। श्री अनुराग मौर्य ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और व्यापार मंडल निघासन के प्रतिनिधियों ने भी रक्तदान शिविर में भाग लिया।

स्वामी रामकृष्ण जी की जयन्ती पर रक्तदान शिविर

8वाँ रक्तदान शिविर स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयंती के उपलक्ष्य में 14 मार्च को ईसानगर ब्लाक के गायत्री शक्तिपीठ, खमरिया पर आयोजित किया गया। इसमें श्री सत्य प्रकाश वर्मा व नरेश जायसवाल ने सपरिवार रक्तदान किया। साथ ही राम शंकर मौर्य, नीरज कुमार जायसवाल, लालता रस्तोगी, पंकज रस्तोगी, आलोक जायसवाल, सरदार निर्मल, सिंह आदि ने भी रक्तदान कर परमहंस जी को श्रद्धांजलि समर्पित की।

गर्भवती महिलाओं में फल बाँट कर मनाया गुरुवर का जन्मदिवस

जतारा,टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ की युवा टोली ने परम पूज्य गुरुदेव का आध्यात्मिक जन्मदिवस मनाते हुए अपने सेवा भाव का परिचय दिया। परम पूज्य गुरुदेव के पदचिह्नों पर चलते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर गर्भवती महिलाओं और कुपोषण वॉर्ड में भर्ती मरीजों में यज्ञभाव के साथ पौष्टिक आहार के रूप में फल वितरित किये। सभी के उत्तम स्वास्थ्य की गुरुसत्ता से प्रार्थना की, गायत्री मंत्र जप की प्रेरणा दी।

दो दिवसीय वसन्त पर्व 12 घण्टे के अखण्ड जप एवं यज्ञ के साथ मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को परम पूज्य गुरुदेव के अवतारी जीवन का परिचय दिया गया।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर श्रीमती मंजुबाला को मिला सम्मान

जोबट। मध्य प्रदेश

7-8 मार्च को राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना एवं शिवाजी योग संस्थान ने वर्धमान भवन, जोबट में मातृशक्ति सम्मान समारोह आयोजित किया। इसमें शासकीय क.उ.मा. विद्यालय जोबट की शिक्षिका श्रीमती मंजुबाला श्रीवास्तव सहित 60 से अधिक महिलाओं को शिक्षा, साहित्य, सेवा के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री कालूलाल गुर्जर, राजस्थान विवि, जयपुर के डीन डॉ. नन्दकिशोर पांडेय, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलानुशासक डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

श्रीमती मंजुबाला सम्मान प्राप्त करते हुए

श्रीमती मंजुबाला श्रीवास्तव शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री केसरी कपिल जी की बेटी हैं। वे विगत 25 वर्षों से बाल संस्कार शाला, किशोर संस्कार शाला तथा 5 वर्षों से विद्यालय में कन्या कौशल सत्र चला रही हैं। शैक्षणिक संस्थान में पुस्तक मेलों का आयोजन भी उन्होंने कराया है।

अभिनव समाज की संरचना के लिए सद्विचार फैलाते, सद्भाव जगाते कार्यक्रम

गुरुदीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में लगायी चित्र प्रदर्शनी

गणमान्यों को प्रदर्शनी दिखाते डॉ. सी.एल. नेमा

हटा। मध्यप्रदेश

प्रज्ञा पुत्र डॉ. सी.एल. नेमा ने अपनी गुरुदीक्षा के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 19 फरवरी को एक चित्र प्रदर्शनी लगाई। इसमें पिछले 50 वर्षों में मिशन द्वारा किए गए प्रमुख कार्यों को दर्शाया गया था। गायत्री यज्ञ भी रखा गया था, जिसमें पूर्व सांसद डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया, विधायक पी. एल. तंतुवाय, पूर्व विधायक उमादेवी खटीक, डॉ विजय सिंह राजपूत, पंकज हर्ष श्रीवास्तव, हरिनारायण चौरसिया के अलावा लगभग 200 से अधिक परिजनों ने गायत्री यज्ञ में आहुतियां देकर डॉ. नेमा की श्रद्धा-सक्रियता को निरन्तर बढ़ाते रहने की प्रार्थना गुरुसत्ता से की।

गुरुभक्ति

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. श्यामसुंदर दुबे साहित्यकार थे। उन्होंने कहा कि डॉ. सी.एल. नेमा जी ने एक सफल चिकित्सक होते हुए भी गुरुकृपा से समाजसेवा का मार्ग चुनकर हजारों लोगों को लोकमंगल के लिए अनुप्राणित किया। उपस्थित सभी ने उनके सेवाकार्यों को अद्भुत-अनुकरणीय बताया।

पाठकों से विनम्र प्रार्थना

इन दिनों कोविड-19 संक्रमणकाल की विशेष परिस्थितियों में प्रज्ञा अभियान के प्रकाशन और प्रेषण में अनेक अड़चनें उपस्थित हो रही हैं।

• नियमित प्रकाशन वाला कागज़ सहजता से उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, इसलिए कुछ दिनों के लिए सामान्य अख़बारी कागज़ का भी प्रयोग करना पड़ रहा है। • पोस्टल विभाग की क्षमता भी सीमित हो गई है, जिसके कारण अधिक संख्या में रजिस्ट्री से डाक भेजना संभव नहीं हो पा रहा है। यही कारण है कि 25-25 सदस्यों वाले बण्डल रजिस्ट्री से न भेजकर बुक-पोस्ट से ही भेजे जा रहे हैं। • महँगाई भी निरन्तर बढ़ती ही जा रही है, जिसके कारण कागज़-छपाई के दाम बढ़ गए हैं।

ऐसी प्रतिकूलताओं के बीच परिजनों से निवेदन है कि परिस्थितियों से तालमेल बिठा लें। आपको हो रही असुविधा के लिए हमें खेद है। आशा है जल्द ही परिस्थितियाँ सामान्य हो जायेंगी और प्रज्ञा अभियान अपने मूल रूप में पाठकों को मिलने लगेगा।

निवेदक : सम्पादक, प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

युवा शिविर से सामाजिक क्रान्ति

- युवाओं ने मांसाहार छोड़ा
- 27 युवाओं ने दीक्षा ली
- 9 नई बाल संस्कार शाला आरम्भ करने के संकल्प उभरे

बागबहरा। छत्तीसगढ़

कोमाखान बागबाहरा में परिक्षेत्र साहू समाज के मुख्य सहयोग से तीन दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर आयोजित किया गया। इसमें 125 युवा भाई बहनों की उपस्थिति रही। मुख्य मार्गदर्शन डॉ. कुन्ती साहू की और परिकल्पना श्री लक्ष्मीनाथ जी की थी। सभी समाज जनों ने युवाओं के मार्गदर्शन हेतु शिविर की उपयोगिता को स्वीकारा। एक प्रकार से इसके माध्यम से युवाओं के अंतःकरण में एक नई सामाजिक क्रांति का सूत्रपात हुआ।

शिविर में अनेक भाई-बहिनों ने मांसाहार छोड़ने का संकल्प लिया। 27 भाई-बहिनों ने दीक्षा संस्कार कराया। 9 बाल संस्कार शाला आरम्भ करने के संकल्प उभरे। कबीर संस्थान से एक संत जी ने भी पूरे शिविर का लाभ लिया एवं बाल संस्कार शाला चलाने का संकल्प लिया।

नारी जागरण प्रधान कार्यक्रम

12 गाँवों की 53 गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार हुआ

गुजरा, धमतरी । छत्तीसगढ़

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार का आओ गढें संस्कारवान पीढ़ी कार्यक्रम के अंतर्गत प्रज्ञापीठ गुजरा के स्थापना दिवस पर 24 कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से विशाल पुंसवन संस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें नारी जागरण एवं 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को मुख्य रूप से प्रोत्साहित किया गया। रायपुर की श्रीमती सरला कोसरिया ने कहा कि आज बढ़ते हुए अनीति, अत्याचार को समाप्त करने, गाँव को नशामुक्त बनाने के लिए नारी शक्ति को आगे आना होगा। उन्होंने बहिनों को साहसपूर्वक अनचाही परम्पराओं को त्यागने एवं बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार देने के लिए प्रेरित किया।

बहिनों का पुंसवन संस्कार कराते गायत्री परिवार के पुरोहित

आकर्षक विद्यारम्भ संस्कार समारोह

11 कुण्डीय यज्ञ के साथ 310 विद्यार्थियों का संस्कार

वेदों की आकर्षक शोभायात्रा भी निकाली गई

अशोक नगर,गुना। मध्य प्रदेश

वसंत पर्व के पुनीत दिन पर स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर मा. वि. में 310 छात्र-छात्राओं का सामूहिक विद्यारम्भ संस्कार गायत्री परिवार के आचार्यों द्वारा 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर लगभग 800 अभिभावक एवं सभी आचार्य परिवार उपस्थित थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक श्री जजपाल सिंह जज्जी थे, अध्यक्षता जिला प्रचारक श्री रामवीर कौरव ने की। विद्यालय समिति के सदस्य एवं प्राचार्य श्री मुकुट बिहारी शर्मा एवं प्रधानाचार्य श्री महेश कुमार वर्मा साहित कई गणमान्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

गायत्री परिवार के पुरोहितों ने विद्यारम्भ संस्कार को विद्यार्जन की वास्तविक दिशा का बोध कराने वाला संस्कार बताया। अभिभावकों की गोद में बच्चों को बिठाकर बच्चों से प्रणवाक्षर लिखवाया गया। विधायक महोदय ने सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य/दीदी की निष्काम सेवाओं की सराहना की।

आई. टी. आई. में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

सीतापुर। उत्तरप्रदेश

5 मार्च को गायत्री परिवार आलमबाग शाखा द्वारा आई.टी. आई. गोंदलामउ में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु एक कार्यक्रम अयोजित किया गया। इस में लगभग 160 छात्र-छात्राओं सहित कॉलेज के अध्यापकों और अन्य स्टाफ ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यकारी प्रधानाचार्य श्री अवधेश कुमार के स्वागत से हुआ। कार्यक्रम के प्रथम वक्ता गायत्री परिवार के प्रतिनिधि श्री अरुण श्रीवास्तव ने सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन,अलबर्ट आईस्टीन और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से आस्तिक जीवन के प्रति विद्यार्थियों में आकर्षण जगाया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने कहा कि अध्यात्म कमजोरी नहीं, कमजोरी को दूर करने का विज्ञान सम्मत विधान है।

> अध्यात्म कमजोरी नहीं है, कमजोरी को दूर करने का विज्ञान सम्मत विधान है।
> – श्री अरुण श्रीवास्तव, गायत्री परिवार

गायत्री परिवार की ओर से श्री जे. एस. शर्मा एवं श्री ए.के. गुप्ता ने भी विद्यार्थियों को सत्प्रेरणाएँ दीं। श्री गुप्ता जी ने उन्हें जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यकारी प्रधानाचार्य श्री अवधेश कुमार ने इस कार्यक्रम को अत्यंत प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक बताया। अंत में सभी छात्र-छात्राओं को और शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक स्टाफ को गुरुवर की पुस्तकें भेंट की गई।

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

तेलंगाना में उत्साह की लहर

गायत्री चेतना केन्द्र, हैदराबाद पर युवाशक्ति का समागम

हैदराबाद। तेलंगाना

इन दिनों शान्तिकुञ्ज के दक्षिण जोन प्रभारी प्रतिनिधि श्री परमानन्द द्विवेदी, उत्तम गायकवाड़ और रामदास रघुवंशी तेलंगाना में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के कियान्वयन के लिए हैदराबाद में सक्रिय हैं। उनके सान्निध्य में 7 मार्च को एक गोष्ठी हुई जिसमें तेलंगाना के लगभग 100 सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। सभी क्षेत्रों में मिशन के विस्तार के लिए इस योजना को जन-जन तक पहुँचाने की योजना बनाई गई। यह पूरी योजना क्षेत्रीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री अश्विनी सुब्बाराव, वाणी बहिन, श्री उपेन्द्र जी, श्री गोकुल जी, श्री एम.वी.एस. राजू से परामर्श एवं सर्वसम्मति से बनाई गई है।

अश्वमेध यज्ञ की स्मृति में बनाया युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य हैल्थ गार्डन

केन्द्रीय प्रतिनिधियों के सान्निध्य में तेलंगाना के कबीना मंत्री श्री मल्ला रेड्डी एवं पूरे परिवार के साथ उनके घर गंगा अमृत कुम्भ एवं शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों की स्थापना की। उल्लेखनीय है कि हैदाराबाद में सम्पन्न अश्वमेध महायज्ञ उनके प्रमुख सहयोग से उन्हीं के कॉलेज के मैदान में सम्पन्न हुआ था। वे और उनके परिवारीजन आज भी अश्वमेध महायज्ञ की याद कर गद्गद हो जाते हैं।

2400 नए घरों से हुआ सम्पर्क

अधिकांश ने अखण्ड ज्योति पत्रिका की सदस्यता ली

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

जिला सुलतानपुर में डॉ. सुधाकर सिंह की अगुवाई में घर-घर कुम्भ स्थापना का अभियान प्रतिदिन पूरे जोश और उत्साह के साथ जारी है। 5 मार्च को समाचार मिलने तक जनपद के 2400 से अधिक घरों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर स्थापनाएँ की गई। उनमें से अधिकांश घरों को अखण्ड ज्योति पत्रिका का सदस्य बनाया जाना इस अभियान की महत्त्वपूर्ण सफलता थी।

हर घर गायत्री उपासना और बलिवैश्व यज्ञ आरम्भ करने की प्रेरणा

नागपुर । महाराष्ट्र

गायत्री परिवार नागपुर के यशोदा महिला मण्डल की बहिनों ने अपने-अपने क्षेत्र में गंगाजल और देवस्थापना का विधिवत अभियान चलाया है। गजानन महाराज के प्राकट्य दिवस-5 मार्च से अभियान का शुभारंभ हुआ। उस दिन 48 नए परिवारों में स्थापना की गई। बहिनें नए घरों में गायत्री के तत्त्वदर्शन से लेकर साधना विधान, उसके लाभ विस्तारपूर्वक समझाती हैं। हर घर में गायत्री उपासना और बलिवैश्वदेव यज्ञ की परम्परा आरम्भ हो, ऐसे प्रयास उनके द्वारा किये जा रहे हैं।

प्रतिदिन घर-घर सम्पर्क अभियान चला रही हैं नागपुर की क्रान्तिकारी बहिनें

पीछे देखा-भूतकाल की घटनाओं से सीखो, आगे देखा-उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास रखो, आसपास देखो-वास्तविकता को पहचानो तथा अंतःकरण में झाँको-अपने को जानो।

देव संस्कृति के घर-घर विस्तार की अभूतपूर्व उमंग लेकर आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष और महाकुम्भ हरिद्वार-2021 का अद्भुत संयोग देव संस्कृति की घर-घर प्रतिष्ठा एवं उसके प्रति श्रद्धा-अभिवर्धन का शानदार सिद्ध हुआ है। शान्तिकुञ्ज के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय लोगों को इस अभियान का महत्त्व बताने, कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाने तथा विशिष्ट विभूतियों के घर कुम्भ एवं शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों की स्थापना करने स्वयं पहुँच रहे हैं। 26 से 28 फरवरी तक वे उत्तर प्रदेश में मेरठ से लेकर मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मंदसौर व राजस्थान के हाड़ौती, वागड़ एवं मेवाड़ संभाग के प्रवास पर थे। इन तीन दिनों में अनेक कार्यकर्त्ता सम्मेलन हुए, बड़ी-बड़ी सभाओं को उन्होंने सम्बोधित किया। लाखों लोगों तक युग परिवर्तन के लिए नवचेतना जगाने का संदेश पहुँचा। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयसिंह यादव, श्री रामावतार पाटीदार, श्री हरीश नेताम, जयपुर के डॉ. प्रशान्त भारद्वाज, रतलाम के श्री विवेकानन्द चौधरी इस प्रवास में डॉ. चिन्मय जी के सहयोगी थे। तीन दिवसीय प्रवास के संक्षिप्त समाचार पृष्ठ 7 भी पर पढ़ें।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हुईं नई स्थापनाएँ

मेरठ। उत्तर प्रदेश

दिनांक 26 फरवरी को गायत्री चेतना केन्द्र, पालम विहार मेरठ की विस्तार भूमि का 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ समारोह के साथ भूमिपूजन हुआ। युवा नायक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भूमिपूजन के बाद क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं की सक्रियता का अभिनन्दन करते हुए कहा कि इस केन्द्र के कार्यकर्त्ताओं के प्रखर व्यक्तित्व से आसपास के क्षेत्र में युगचेतना का आलोक तेजी से फैल रहा है। इस अवसर पर उन्होंने कार्यकर्त्ताओं और गणमान्यों को गंगा अमृत कुम्भ एवं देवस्थापना चित्र प्रदान करते हुए 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का शुभारम्भ भी किया।

शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री श्यामबिहारी दुबे की टोली ने यज्ञ-भूमिपूजन का विधि-विधान सम्पन्न कराने के साथ 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान को योजनाबद्ध ढंग से जन-जन तक पहुँचाने की प्रेरणा और प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में बागपत, शामली, मुज़फ़्फ़रनगर सहित कई जनपदों के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

मेरठ में गायत्री चेतना केन्द्र की विस्तार भूमि का पूजन करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

ग्वालियर, मध्य प्रदेश में प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा की प्राण प्रतिष्ठा

आद्यशक्ति गायत्री में व्यक्ति के चिन्तन-चरित्र को बदलने की सामर्थ्य है।

– डॉ. चिन्मय जी

ग्वालियर। मध्य प्रदेश

26 फरवरी को गायत्री चेतना केन्द्र पिण्टो पार्क में नवनिर्मित 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का प्राण प्रतिष्ठा समारोह था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी इस विशिष्ट अवसर पर ग्वालियर पहुँचे और प्राण प्रतिष्ठा की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने इस अवसर पर लोगों से आज के दूषित वातावरण के परिष्कार के लिए घर-घर माँ गायत्री और यज्ञ भगवान को प्रतिष्ठित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संसार में अपराध, अत्याचार, भय, बीमारी आदि बढ़ने का सबसे बड़ा कारण व्यक्ति के दूषित विचार ही हैं। इन्हें ठीक करने के भौतिक प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि मानव का चिन्तन और चरित्र न बदल जाये। आद्यशक्ति माँ गायत्री की साधना व्यक्ति की भावनाओं को बदलने की सामर्थ्य प्रदान करती है।

कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से शक्तिपीठ-संगठन प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री के.पी. दुबे जी और मध्य जोन प्रभारी श्री योगेन्द्र गिरी वहाँ उपस्थित थे।

माँ भगवती स्वावलम्बन केन्द्र का भूमिपूजन एवं शिलान्यास

शामगढ़, मंदसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ शामगढ़ में आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान के शुभारम्भ के साथ-साथ गायत्री शक्तिपीठ विस्तार योजना (माँ भगवती स्वावलम्बन भवन) के लिए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भूमिपूजन एवं शिला का अनावरण भी किया। इस अवसर पर शक्तिपीठ के सभी ट्रस्टीगण एवं अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

अपने सम्बोधन में उन्होंने गायत्री एवं गंगा भारतीय संस्कृति की प्राणदायिनी दो दिव्य धाराएँ हैं। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं को मानवता के उत्थान के लिए इन्हें घर-घर पहुँचाकर वहाँ नित्य उपासना, यज्ञ, संस्कार आदि की परम्पराओं को पुनर्जीवित करने का अभियान तेज करना चाहिए।

गरोठ में गायत्री प्रज्ञा मण्डल, दिया ग्रुप गरोठ सहित माँ गायत्री रसाहार केन्द्र के सदस्यों ने विजय चौक पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का भव्य स्वागत किया।

सुवासरा में गायत्री शक्तिपीठ के परिजनों एवं नगर के श्रद्धालुओं की ओर से पेट्रोल पम्प पर भव्य स्वागत समारोह रखा गया था।

सीतामऊ में भी संक्षिप्त उद्बोधन के साथ कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया गया।

माननीय मंत्री जी की युग निर्माण आन्दोलन के प्रति आस्था, शक्तिपीठ के सहयोगियों का सम्मान

खेजड़िया में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष एवं कुम्भ के विशेष अभियान 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' का जोरदार स्वागत हुआ। कुंवर अरविंद सिंह राठौर एवं प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल के सदस्यों ने डॉ. चिन्मय जी का तिलक कर शॉल-पुष्पहार के साथ स्वागत किया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के नवीकरणीय ऊर्जा पर्यावरण मंत्री श्री हरदीपसिंह डंग भी उपस्थित हुए दण्डवत प्रणाम करते हुए युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।

डॉ. चिन्मय जी कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए एवं माननीय मंत्री जी से चर्चा करते हुए

खेजड़िया में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए डॉ. चिन्मय जी ने कोरोना संकटकाल को घर-घर सांस्कृतिक चेतना के विस्तार के अवसर में बदलने का आह्वान किया। सर्वप्रथम उन्होंने मंत्री जी को गंगा अमृत कुम्भ एवं देवस्थापना सेट भेंट किए।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने खेजड़िया शक्तिपीठ के विकास-विस्तार में योगदान देने वाले तीन समर्पित श्रद्धालुओं श्रीमती कल्पना कुँवर (भूवासा होकम) गरमोड़ी, श्री ईश्वरलाल धनोतिया नीमच (खेजड़िया) का परिवार तथा ठा. महेन्द्रसिंह राठौर खेजड़िया का गायत्री मंत्र का उपवस्त्र ओढ़ाकर विशिष्ट सम्मान किया। डॉ. चिन्मय जी ने शक्तिपीठ पर वृक्षारोपण भी किया।

हाड़ौती संभाग में आयोजित हुए कार्यकर्त्ता सम्मेलन

झालावाड़। राजस्थान

झालावाड़ में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने जीवन में आस्तिकता और आस्थाओं को सुदृढ़ करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जीवन शैली व्यक्ति को ऐसी शिक्षा और संस्कार देती है, जिससे वह स्वतः ही व्यक्तिगत और सामाजिक अनुशासनों का पालन करने लगता है। उन्होंने गंगा अमृत कुम्भ को भारतीय संस्कृति के प्रति जन-जन में आस्था का संचार करने का एक महान राष्ट्रव्यापी अभियान बताया।

27 फरवरी के कार्यक्रमों का शुभारम्भ झालावाड़ के इस कार्यक्रम से हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के शक्तिपीठ पहुँचने पर प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री गोपाल शर्मा, संजय पाटीदार, ज्वाला प्रसाद शर्मा, शैलेन्द्र यादव आदि ने मंगल तिलक एवं पुष्पहार के साथ स्वागत किया। राजस्थान जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयसिंह यादव ने कार्यकर्त्ताओं को गंगा अमृत कलश एवं साहित्य के सेट प्रदान किए। गोष्ठी में पूरे जिले के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

बाराँ, खानपुर और भवानी मण्डी में

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति की गोष्ठियाँ झालावाड़ जिले की खानपुर एवं भवानी मण्डी तहसील मुख्यालयों पर भी गोष्ठियाँ हुईं। इन गोष्ठियों में उन्होंने बच्चों को अच्छे संस्कार देने तथा युवाओं को मिशन से जोड़ने पर बल दिया।

बाँये झालावाड़ में और दायें बाराँ में आयोजित हुए कार्यकर्त्ता सम्मेलन 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार'

मेवाड़ की बलिदानी परम्परा को नमन ऐतिहासिक वीरभूमि 'हल्दीघाटी' में रजवन्दन

खमनौर, राजसमंद। राजस्थान

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने राजस्थान प्रवास में राजस्थान की बलिदानी परम्परा को नमन करने हल्दीघाटी पहुँचे। वहाँ की पवित्र रज का नमन, वंदन, पूजन किया और वीर शहीदों का भावभरी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। गायत्री परिवार के परिजनों ने वहाँ उनके परम्परागत स्वागत के साथ चाँदी के कलश में हल्दीघाटी की रज, स्थानीय शिल्प एवं चैत्री गुलाब के उत्पाद भेंट कर सम्मानित किया।

डॉ. चिन्मय जी बलीचा स्थित महाराणा प्रताप संग्रहालय पहुंचे। वहाँ लाइट एण्ड साउण्ड शो देखकर मेवाड़ और हल्दीघाटी के इतिहास को जाना। तत्पश्चात् चेतक स्मारक पर श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

विश्व में छाई विषाक्तता के शमन के लिए मानव में देवत्व जगाना होगा

वागड़ और मेवाड़ की विशाल जनसभाओं में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का कार्यकर्त्ताओं एवं बुद्धिजीवियों से आह्वान

शांतिकुंज की स्वर्ण जयंती समग्र मानवता के कल्याण के संकल्प की स्वर्ण जयन्ती है

लियो कॉलेज, बाँसवाड़ा में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते डॉ. चिन्मय जी

बाँसवाड़ा। राजस्थान

27 फरवरी को लियो कॉलेज, बाँसवाड़ा में एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। इस सभा में नगर में पहली बार पधारे युवा युगनायक को सुनने के लिए जिले के समर्पित कार्यकर्त्ताओं के साथ अनेक गणमान्य उपस्थित थे। डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि का प्रथम स्वागत नगर परिषद के अध्यक्ष श्री जैनेन्द्र त्रिवेदी ने किया।

आदरणीय चिन्मय जी ने गायत्री महामंत्र की सामर्थ्य, गायत्री परिवार एवं शान्तिकुञ्ज के महान उद्देश्य से लोगों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि समाज में हो रही अनहोनी एवं अमानवीय घटनाएँ संस्कारों के अभाव का परिणाम है। इन्हें रोकने के लिए मानव के भीतर विद्यमान आत्म देवता को जाग्रत् करना होगा। गायत्री परिवार एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय इंसानियत को जगाने और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का कार्य कर रहा है। शांतिकुंज की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यह किसी आश्रम की स्थापना की नहीं बल्कि समग्र मानवता के कल्याण के संकल्प की स्वर्ण जयन्ती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गोविंद गुरु ट्राइबल यूनिवर्सिटी के उपकुलपति श्री इंद्रवर्धन त्रिवेदी ने की। समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूरे जिले में घर-घर गंगा, गायत्री, यज्ञ, संस्कार को प्रतिष्ठित करने के अभियान को गति देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्रीमती आशा द्विवेदी, हरभगवान जी धींगरा, पुष्पेन्द्र पण्ड्या, दिनेश मेहता, घाटोल से अंबालाल पंचाल, दुर्ग सिंह शाक्य, लियो संस्थान के डायरेक्टर मनीष जोशी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ता और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

बड़ी साखथली, प्रतापगढ़। राजस्थान

बाँसवाड़ा से पूर्व बड़ी साखथली में कार्यकर्त्ता गोष्ठी के साथ वागड़ क्षेत्र के कार्यक्रमों का शुभारम्भ हुआ। गायत्री परिवार के उदयपुर संभाग प्रभारी श्री कुलदीप सिंह राणावत ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का भावभरा स्वागत किया। वहाँ आयोजित सभा में बड़ी संख्या में नगरवासी उपस्थित थे।

बड़ी साखथली में कार्यकर्त्ता गोष्ठी

समाज को सही दिशा देने के लिए सकारात्मक सोच के साथ संकल्पपूर्वक आगे आयें

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी श्री अमेरिका सिंह, उप कुलपति को देवस्थापना चित्र भेंट करते हुए

उदयपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ सर्व ऋतु विलास उदयपुर पर कार्यकर्त्ता संगोष्ठी आयोजित की गई थी। इसे सम्बोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने वर्तमान चुनौतियों की चर्चा करते हुए सकारात्मक सोच के साथ संकल्पपूर्वक समाज को दिशा देने के लिए आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पवित्रता, प्रखरता, परिष्कार इन तीन सूत्रों को अपनाते हुए हम समाज का उत्थान कर सकते हैं। परम पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार करने हेतु हम सभी को मिलजुल कर प्रयास करना होगा।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री अमेरिका सिंह, उप कुलपति सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर शान्तिकुञ्ज में आयोजित एक शिविर में भाग ले चुके हैं। उन्होंने अपने उद्बोधन में गायत्री परिवार की विचारधारा में अध्यात्म और विज्ञान के सम्यक समावेश की प्रमुखता से चर्चा की। उन्होंने कहा कि शांतिकुंज में जो दिशा-निर्देश हमें मिला हुआ है वह हमारे लिए आदर्श जीवन का आधार सिद्ध हुआ।

मुख्य अतिथि श्रीमान गोविंद सिंह जी टांक ने श्रोताओं से ऊर्जावान समाज के निर्माण का आह्वान किया।

इस कार्यक्रम के आयोजन में उदयपुर जिले के युवा संगठन 'दिया' की प्रमुख भूमिका थी। सबने गंगा अमृत कुम्भ के माध्यम से घर-घर गायत्री, घर-घर यज्ञ को पहुँचा देने का शानदार उत्साह दिखाया। अंत में शक्तिपीठ संरक्षक डॉ. आलोक व्यास ने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी महानुभाव भाइयों, बहिनों एवं युवाओं का आभार व्यक्त किया।

(हल्दीघाटी में रजवंदन पृष्ठ 6 पर)

गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा देश की श्रेष्ठ शक्तिपीठों में से एक

सांसद कनकमल कटारा एवं दिगंबर जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे उपस्थित

गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा की विशाल जनसभा में उत्कृष्ट सेवाकार्यों का सम्मान करते गणमान्य

सागवाड़ा, डूंगरपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा में प्रबुद्धवर्ग गोष्ठी एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया था। मुख्य वक्ता डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के साथ सांसद श्री कनकमल कटारा, दशा हुमड जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिनेश खोडनिया, श्री शैलेष शर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष श्री नरेन्द्र खोडनिया सहित अनेक गणमान्य मंचासीन थे। अनेक संस्थाओं के प्रमुख-गणमान्य ने सभा में उपस्थित होकर मानवता के उत्थान के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे अभिनव अभियान की जानकारी ली। कार्यक्रम संयोजक श्री भूपेन्द्र पण्ड्या ने अतिथियों का स्वागत किया एवं परिचय दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती, आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार, गायत्री महामंत्र आदि का महत्त्व बताने के साथ कहा कि समय रहते जीवन की गरिमा का बोध हो जाना परम सौभाग्य की बात है। इसके लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। जीवन के अन्त समय में यह समझ आये तो क्या फायदा?

डॉ. चिन्मय जी ने शक्तिपीठ सागवाड़ा के कार्यकर्त्ताओं के समर्पण और कर्मठता की भरपूर सराहना की। गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा को उन्होंने देश की श्रेष्ठ शक्तिपीठों में से एक बताया।

उत्कृष्ट सेवाओं का सम्मान

क्षेत्र में उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाओं के लिए डॉ. रविन्द्र मेहता, समाजसेवा के लिए पाटीदार समाज के ट्रस्टी श्री गोपाल पाटीदार, सामाजिक समरसता एवं परोपकार के लिए दिगम्बर जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिनेश खोडनिया तथा शिक्षा व पर्यावरण के क्षेत्र में सीबीईओ श्री भेमजी खांट का गायत्री परिवार की ओर से अभिनन्दन किया गया। पालिका अध्यक्ष श्री नरेन्द्र खोडनिया ने डॉ. चिन्मय जी का सम्मान किया।

> धर्मभाव से ही सामाजिक समरसता पनपती है और आपसी जुड़ाव होता है।
> **माननीय सांसद श्री कनकमल कटारा**

बनास गंगा भागीरथ सम्मान और आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार समारोह

> धर्मतंत्र लोकशिक्षण का माध्यम कैसे बने, यह गायत्री परिवार से समझा जा सकता है।
> **- डॉ. सी.पी. जोशी, विधानसभा अध्यक्ष**

राजसमंद। राजस्थान

विश्व में व्याप्त विषाक्तता मनुष्य के दूषित चिन्तन का ही परिणाम है। इसके निवारण का एक ही समाधान है मनुष्य में देवत्व का जागरण। मनुष्य का देवत्व जगेगा तभी श्रेष्ठ समाज होगा और विश्व की विषाक्तता दूर हो सकेगी।

गायत्री शक्तिपीठ राजसमंद परिसर में गायत्री परिवार द्वारा आयोजित बनास गंगा भागीरथ सम्मान और आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार समारोह को सम्बोधित करते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने यह विचार व्यक्त किये। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी थे। इसकी अध्यक्षता सांसद दीया कुमारी ने की। विधायक धर्मनारायण जोशी, श्री मदन दिलावर, नगर परिषद के सभापति श्री अशोक टांक विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन रहे।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि गायत्री परिवार घर-घर सद्विचार, संस्कार और समरसता का संचार करने पहुँच रहा है। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष और महाकुम्भ हरिद्वार का संयोग इस कार्य को कई गुना गति प्रदान करेगा।

गायत्री परिवार के प्रान्तीय समन्वयक श्री घनश्याम पालीवाल ने गायत्री परिवार के बनास अंचल शुद्धिकरण अभियान की जानकारी दी। कार्यक्रम का संयोजन श्री दिनेश श्रीमाली, हिमांशु पालीवाल एवं बद्री प्रसाद शर्मा ने किया। स्मारिका 'वासिष्ठी आराधन' का विमोचन भी किया गया।

मंच पर सांसद दीया कुमारी, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं अन्य गणमान्य

बनास नदी के पुनर्जीवन के लिए जनचेतना जगाने में प्रमुख सहयोगी 14 संस्थाओं का गायत्री परिवार द्वारा सम्मान किया गया।

इनका किया गया सम्मान

- किरण निधि संस्थान (राजसमंद) • मिराज ग्रुप नाथद्वारा (राजसमंद)
- पर्यावरण विकास संस्थान केलवा (राजसमंद)
- वन सुरक्षा समिति पलासमा (उदयपुर) • औषधि बालिका वन मजावड़ी (उदयपुर) • पंचफल उद्यान पीपली अहीरान (राजसमंद)
- इसके अलावा गायत्री परिवार की अजमेर (पुष्कर जोन), जयपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, राजसमंद को बनास गंगा भागीरथ सम्मान प्रदान किया गया।

डॉ. चिन्मय जी से कुम्भ और शान्तिकुञ्ज के प्रतीक ग्रहण करते डॉ. सी.पी. जोशी, विधानसभा अध्यक्ष

नाथद्वारा में स्वागत

प्रभु श्रीनाथ जी की राजभोग की झाँकी के दर्शन किए। वहाँ दर्शन के बाद मंदिर की स्वागत परम्परा के अनुसार श्रीकृष्ण भण्डार के अधिकारी द्वारा उनका उपरना ओढ़ाकर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का भावभरा सम्मान किया गया।

डॉ. चिन्मय जी का श्रीनाथ जी मंदिर में स्वागत

आत्मकल्याण एवं लोकमंगल के लिए हम सबको जीवन में शिवत्व धारण करना ही चाहिए

महाशिवरात्रि पर प्रज्ञेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक करते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का संदेश

महाशिवरात्रि पर्व पर प्रज्ञेश्वर महादेव का अभिषेक करते श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब, आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं आदरणीया शेफाली जीजी। संगीतमय कर्मकाण्ड प्रस्तुत करती टोली एवं दायें-बायें शिवभक्त श्रोतागण

शिव

- तपस्वी हैं।
- परम योगी हैं।
- विवेक की दृष्टि हैं।
- शान्त हैं, शीतल हैं।
- सहज और सरल हैं।
- कल्याणकारी हैं।
- अशिव निवारक रुद्र हैं।
- संतुलन स्थापित करने वाले हैं।

शिवत्व की साधना हम सबको करनी ही चाहिए।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

महाशिवरात्रि (11 मार्च 2021) के पावन पर्व पर अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए करोड़ों परिजनों के आत्मीय श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने प्रज्ञेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक किया। शिव-पार्वती स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का अत्यंत भावपूर्ण हृदय से स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि जो विश्वकल्याण के लिए स्वयं विष पीता है, औरों को सुधा पिलाता है वही शिव है। हमारे गुरुदेव-माताजी ने जीवनभर यही किया। उनके प्रेम, संरक्षण, आशीर्वाद ने करोड़ों लोगों में देवत्व का संचार किया है। वहीं उनके तप ने विश्व की विषाक्तता के शमन एवं असुरता के दमन का सरंजाम जुटाया है। हम सबको भी आत्मकल्याण एवं लोकमंगल के लिए इस शिवत्व को धारण करने की साधना करनी ही चाहिए।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रुद्राभिषेक का विधि-विधान प्रातः 7 बजे से ही अत्यंत आह्लादकारी दिव्य वातावरण में आरम्भ हुआ। फूलों से सजे प्रज्ञेश्वर महादेव परिसर में वासंती उल्लास छलकता रहा। शान्तिकुञ्ज के पुरोहितों के वैदिक मंत्र, युग संगीतज्ञों के सितार, डमरु, शंख, मृदंग आदि वाद्ययंत्रों के स्वर और प्रज्ञागीतो के साथ मिलकर अलौकिक दिव्यता का संचार कर रहे थे।

रुद्राष्टक, महाकालाष्टक, पुरुष सूक्त के मंत्रों से युक्त रुद्राभिषेक का कर्मकाण्ड श्री श्यामबिहारी दुबे और श्री उदयकिशोर मिश्रा ने सम्पन्न कराया। संगीत की प्रस्तुति सर्वश्री ओंकार पाटीदार, शिवनारायण प्रसाद, राजकुमार वैष्णव, बसंत यादव, नारायण रघुवंशी, गणेश पंवार वंशीधर जी आदि की टोली ने की। बीच-बीच में महाकाल के जयकारे अंतर्मन को झंकृत-तरंगित करते रहे।

श्रद्धेय द्वय के साथ आदरणीय डॉ. चिन्मय पड्या एवं आदरणीया शेफाली जीजी भी साथ रहे। देवमंच पर आरती-पूजन का क्रम कुलपति श्री शरद पारधी दम्पती ने सम्पन्न किया।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि इस तरह के सार्वजनिक पर्वायोजन पर्व के उद्देश्य एवं दर्शन को समझाकर जन-जन में उनके प्रति आस्था बढ़ाने के लिए होते हैं। इनके माध्यम से समाज में फैली तमाम भ्रान्तियों को दूर किया जाना चाहिए। लेकिन आजकल शिव आराधना के नाम पर जो अशिव कार्य किए जाते हैं वे चिन्ताजनक हैं। शिव की सच्ची साधना वही है जो समाज में प्रेम, शान्ति, सद्भाव का संचार कर सके।

शान्तिकुञ्ज के शिवालय पर और सप्तऋषि क्षेत्र में भी रुद्राभिषेक का सामूहिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में दम्पतियों ने इसका लाभ लिया।

शिवभक्त पद्मश्री कैलाश खेर द्वारा प्रस्तुत संगीत संध्या से झंकृत हो उठा देसंविवि परिसर

महाशिवरात्रि की पावन संध्या पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में शिवभक्त संगीत सम्राट पद्मश्री कैलाश खेर की संगीत संध्या का आयोजन हुआ। उनके अंतस् को झंकृत कर देने वाली जादूई स्वर-संगीत और पूरी तन्मयता के साथ गाए गए गीतों ने शान्तिकुञ्ज वासियों को अपनी कल्याणकारी भावना एवं युगनिर्माणी संकल्पों को पुष्ट करने का शानदार अवसर प्रदान किया। उनके इस भक्ति भावना को सराहते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि संगीत की ऊँचाई और लोकप्रियता का शिखर छूने के बावजूद श्री कैलाश खेर की शालीनता, शिष्टता, अध्यात्म के प्रति अभीप्सा सबके लिए प्रेरणादायी है।

संगीत संध्या की अध्यक्षता श्रद्धेया शैल जीजी ने की। उत्तर प्रदेश शासन के मुख्य सचिव श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में श्री कैलाश खेर का पूरा परिवार, कुलपति श्री शरद पारधी, शान्तिकुञ्ज परिवार तथा अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

स्वागत के स्वर

आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य उन भावों को जगाना है, जिसका प्रतिनिधित्व शिवरात्रि पर्व करता है। यह आत्मबल सम्पन्न भगीरथों के जागरण का पर्व है। भगवान शिव विष को अमृत में बदलने का कार्य करते हैं। आज समाज को ऐसे ही नीलकंठों की आवश्यकता है।

भगवान शिव इस देश की मिट्टी में घुले हैं। उनके विभिन्न स्वरूपों से विभिन्न व्यक्तित्व निकलते हैं। रुद्र, भैरव प्रकट होते हैं तो महाराणा प्रताप, शिवाजी जन्म लेते हैं। जब महाबुद्धि जन्म लेती है तो कबीर, पतंजलि जैसे विद्वान जन्म लेते हैं। जब स्वयंभू महाकाल का पाप विमोचक स्वरूप उभरता है तो करोड़ों लोगों के हृदय पर हस्ताक्षर करने वाले परम पूज्य गुरुदेव जन्म लेते हैं।

विमोचन

श्रद्धेया शैल जीजी, श्री कैलाश खेर ने विवि की शोध पत्रिका **'देव संस्कृति इण्टर डिसिप्लिनरी इण्टरनेशलन जर्नल'** के नए अंक और इण्डियन क्लासिकल म्यूजिक डिपार्टमेण्ट की शृंखला की एल्बम **'गायत्री मंत्र विविध रागों में'** का विमोचन किया।

श्रद्धेया जीजी का पुत्रवत सिर पर आशीर्वाद

आत्मीयता व मित्रता की अभिव्यक्ति

श्रद्धेया जीजी श्री कैलाश खेर एवं श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी को उपहार देते हुए

हृदयस्पर्शी झलकियाँ

गायत्री और गुरुदेव

श्री कैलाश खेर शिव के ही नहीं, गायत्री के उपासक भी हैं। वे गुरुदेव के साहित्य और विचारों से लम्बे समय से जुड़े हैं। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने बताया कि उनकी प्रथम सन्तान के समय उनकी धर्मपत्नी पूरे गर्भकाल में परम पूज्य गुरुदेव के स्वर में गायत्री मंत्र सुनती रही थी।

'माँ' अनुभूति और अनुदान

श्री कैलाश खेर ने वन्दनीया शैल जीजी को बार-बार 'माँ' कहकर संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जब मैं माँ से मिला तो मेरे हृदय में जो भाव चल रहे थे, वह उन्होंने स्वयं ही बोल दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि होंठ खामोश रहे पर नज़र नज़र से बात कर ली। यह आत्मीयता अद्भुत है।

श्री कैलाश खेर सभा से विदा होने से पूर्व वन्दनीया शैल दीदी से आशीर्वाद लेने उनके पास पहुँचे। इस अवसर पर उनका पुत्रवत सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देना दर्शकों को भी भावविभोर करने वाला था।

हम परस्पर जुड़े हुए हैं

मैं इस गायत्री परिवार का ही सदस्य हूँ। हम एक-दूसरे से कुशा की भाँति जुड़े हैं। कुशा की विशेषता है कि उसकी धार बहुत तेज होती है। एक और विशेषता होती है जो बहुत कम लोग जानते हैं कि कुशा की जड़ें एक-दूसरे से मिली होती हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने हमें कुशा की भाँति एक परिवार का सदस्य बनाया है और संदेश दिया है कि जो जहाँ है, वहीं से जगत को जगाये।

शिव भाव में तन्मयता

श्री कैलाश खेर के जादूई स्वरों के साथ उनकी योगियों जैसी भाव-भंगिमा प्रभावित करती रही। भक्ति की मस्ती में डूब जाना, नृत्य करना हर श्रोता के मन को छूने वाला था।

झूम उठी तरुणाई

सभागार की दर्शक दीर्घा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय-शान्तिकुञ्ज की तरुणाई हर गीत का आनन्द लेती, स्वर-ताल के साथ झूमती दिखाई दी।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.in

Publication date: 27.3.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23